27–5–67 ओमशांति रात्रीक्लास

हर एक सेंटर वाले अपने2 सेंटर का समाचार सुनावेंगे। यह (इलाहाबाद)सेंटर ही तीर्थ यात्रा पर। .....मेले लगते हैं। हैं भी झूठे मेले। सच्चा नहीं। त्रिवेणी नदी झूठ कह देते। कहते हैं कि एक गुप्त नदी है। अंधश्रद्धा तो बहुत है ना। यहां भी कहते हैं कि गंगा आती है। अब तुम बच्चे समझते हो कि वो सब रांग है। दुनियां नहीं समझती। शास्त्रों के उपर मदार बहुत है। शास्त्रों को बहुत मानते हैं। भक्तिमार्ग है तो शास्त्रों को ही मानना पड़े। भक्ति मार्ग का सारा मदार शास्त्रों पर है। उनको कुछ भी पता नहीं है कि सत्य किसको कहा जाता है। दुनियां नहीं जानती है। कहते भी हैं कि बाप सत्य बोलते हैं। बाप ने सत्य नारायण की कथा सुनाई थी। ल.ना. का राज्य था। इस पढ़ने पर पद मिला। पढ़ाई तो है ना। भक्तिमार्ग में कोई सत्यनारायण की कथा सुनने से बन नहीं जाते। समझते हैं कि कोई बना था। जो पास्ट हो गया है। उनको फिर भक्ति मार्ग की लाइन में ले जाते हैं। पास्ट में जो होकर गये हैं उनका गायन है। तुम बच्चे जानते हो कि राइट क्या है रांग क्या है। रांग कर्तव्य करने पर मनुष्य को दुःख होता है। अब यह बुद्धि में है कि राइट बाप कब आते हैं। दुनियां नहीं जानती। तुम बच्चे यहां ज्ञानमार्ग में हो। तुमको राइट रांग का पता है। कुम्भ के मेले पर स्नान करते हैं कि पाप कटेंगे। ऐसे तो नही ना कि और मनोकामनायें पूरी होंगी। सबसे मांगते रहते हैं। अब तुम बच्चों को तो मांगने से मरना भला। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बाप को आकर पतित से पावन बनाना ही है। समय हुआ है तो बाप भी आया है। बाप ने परिचय दिया है कि मैं आया हूँ राइट रास्ता बताने। बाप कहते हैं कि तुमको मांगने की दरकार नहीं। बाप रास्ता बताते हैं। कहते हैं मेरा यह पार्ट है। ड्रामा की आदि,मध्य,अंत को भी तुम जानते हो। बच्चे ही समझते हैं कि इस मृत्युलोक में यह अंतिम जन्म है। हम तो अमर बाबा से अमरकथा सुन रहे हैं। बाकी वहां शंकर पार्वती को फिर अमरकथा कैसे सुनावेंगे?तुम बच्चे जानते हो कि अब हम बर्थ पाउंड बन रहे हैं। बाप आया हुआ है। दुनियां नहीं जानती है। तुम एक्टर्स हो ना। आत्मा कितनी छोटी बिंदी है। वो फिर एक्टर है। जैसे बाप के पास सारे ड्रामा की नालेज है वैसे ही बच्चों को भी होनी चाहिए। ड्रामा का किसी को भी पता नहीं है। तुम सभी मलूक फरिश्ते बन रहे हो। मनुष्य जनावरों मिसल मरेंगे। यह ज्ञान तुम कोशिश कर भक्तों को सुनाते रहो। मनुष्य बिल्कुल ही घोर अंधेरे में हैं। कहते हैं कि शास्त्रों को माने वा तुमको?परंतु धीरे2 यह सब समझते जावेंगे। जानते हो बाबा आया हुआ है अमरकथा सुनाने। नाम तो बहुत दे दिये हैं। कथा अर्थात् कहानी। कहानी को नालेज नहीं कहा जाता। शास्त्रों में भी पास्ट की कहानियां ही हैं। जो पास्ट में था वो अब प्रेजेंट है। बाप ही प्रेजेंट में सुना रहे हैं। .....कि हर 5000वर्ष बाद हमको आना पड़ता है। कल्प2 तुम्हीं सुनते हो। फिर तो कहते हो कल्प2 बाबा हम आकर मिलते हैं। बेहद की ही पढ़ाई तो बेहद का ही सन्यास है। बेहद द्वारा बेहद की ही बात है। बेहद का मेला सतयुग में फिर हद का मेला है। रावण राज्य में है हद का। समझानी तो बहुत सहज है। कल्प पहले जिन्होंने समझा है वो ही समझेंगे। शिव के मंदिर तो बहुत हैं ना। जाकर समझाओ कि यह बाप तो ज्ञान का सागर है। सुख, शांति का सागर है। (इसने) पढ़ाया भी था,राजयोग भी सिखाया था। भारत को ही सूर्यवंशी राजधानी देकर गये थे। जानते तो हो ना कि बरोबर यह स्वर्ग के मालिक हैं। जानते हो कि कल्प2 बाप आकर पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई ही में रमण करना चाहिए। औरों को भी पढ़ाना चाहिए। इसमें कोई गफलत नहीं है। याद की यात्रा है गुप्त। गुप्त बाबा गुप्त पढ़ाई। सब कुछ गुप्त ही गुप्त है। देने का कब खयाल नहीं आना चाहिए। तुम्हीं लेते हो। हम 21जन्म लिए। सुदामा मिसल महल लेते हैं। फिर दिया वो लिया। हमने दिया यह संकल्प आने पर ही रांग हो जाता है। हम बाबा को देते हैं भविष्य 21जन्म के लिए लेने लिए। ऐसे अंदर में ज्ञान आना चाहिए। यह (ब्रह्मा बाबा)कब समझेंगे कि हमने बाबा को दिया?दो मुट्ठी देकर विश्व की बादशाही ले ली तो वो देना थोड़े ही हुआ। झोली झट भर लेते हैं। भोलानाथ हैं ना। यह ड्रामा ही बना हुआ है। अच्छा, आज्ञाकारी बच्चों को यादप्यार और गुडनाइट।